आपातकाल में सृजन फुलवारी

विन्ध्य प्रकाश मिश्र विप्र

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

विन्ध्य प्रकाश मिश्र 'विप्र'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-201-2

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, विन्ध्य प्रकाश मिश्र 'विप्र'

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY VINDHYA PRAKASH MISHRA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	घर	6
2.	खुद को भूल गया	7
3.	आदत की कोई दवाई नहीं है	8
4.	बहुमूल्य जीवन	9
5.	प्रदूषण से हानि	10
6.	बचपन	11
7.	फूल	12
8.	गीत बनाकर गाया कर	13
9.	राम आओ फिर एक बार	14
10.	पैसे से मत तोलो	15
11.	माँ	16
12.	रो लूं कैसे	17
13.	मुझे स्वीकार नहीं	18
14.	बदरा आ जा	19
15.	याद मुँह जुबानी हो	20
16.	बाल कविता	21

घर

सब समस्या का हल है घर,
सुख सुकून का पल है घर।

भाव भावना लिए समेटे,
कई स्मृति का दल है घर।

जहाँ सुमति संस्कार पले,
वही सही सुफल है घर।

खुद को भूल गया

खुद को ही मैं भूल गया हूँ
नहीं मिला हूँ वर्षो से।

अपनी बातें भूल गया हूँ
सबकी हालत चर्चो से।

जेब कहा है पता नहीं पर
बढते जाते खर्चों से।

शौक किनारे रखकर भूला
नहीं मिला हूँ अरसो से।

खुद को ही मैं भूल गया हूँ
नहीं मिला हूँ वर्षों से।

आदत की कोई दवाई नहीं है

जैसा हूँ वैसा समझते रहे तो,
इसमें तो कोई बुराई नहीं है।

दिल से मिलो अपने को सदा तुम,
ऐसे कि मानो कोई खांई नही है।

दूरी सदा ही नुकसान करती
इसमें किसी की भलाई नही है।

सही को बुरा कहने वाले कहेंगे,
आदत की कोई दवाई नही है।

बहुमूल्य जीवन

जीवन है बहुमूल्य समझो इसे तुम।
इकपल गवाना भी अच्छा नही है।

भुला दो किया जो व्यवहार उसने।
नफरत रखाना भी अच्छा नही है।

सहयोग न कर सको तो भी क्या है।
पर पाप कमाना भी अच्छा नही है।

पौरुष को त्यागा बने क्यों अभागा।
समय यूँ गवाना भी अच्छा नही है।

बदल दो जो बाधा बनी है रुकावट।
यूँ आशू बहाना भी अच्छा नही है।

प्रदूषण से हानि

मानव ने खूब की मनमानी
प्रकृति की कर दी हानि।
गंदी कर दी हवा पानी
खनन किया की मनमानी
धरती अब नही रही धानी
वृक्ष काट पहुंचायी हानि।
देख सूरज को गुस्सा आया
आंख लालकर क्रोध दिखाया
मानव फिर भी समझ न पाया
करदी बडी बडी नादानी
आग बरषती है अम्बर से
सूख गया है सब पानी
बाढ प्रदूषण सूखा रोग
पहुंच रही है बडी हानी
लुप्त हो रहे पशु पक्षी सब
प्रकृति से हुई छेडखानी
रही कृतिमता जीवन भर मे
करता है नित मनमानी।

बचपन

बचपन के दिन की यादे
प्यारी सी तोतली बाते
नही चाह नही परवाह
खुशी भरी थी दिन व रातें
आगे की परवाह न थी
न पछतातें बीती बातें
मस्त मगन थे खुशी हर तरफ
मजबूत थे रिस्ते नाते
लोभ द्वेष का पता न था
टूटे कंचे पाकर इतराते
प्रश्न बहुत थे बडी शरारत
मात पिता को बहुत शताते।

फूल

महक रहा अपने गुण से वह
लोगों ने मसला तोडा है।

कांटो के संग पला बढा पर
फूल महकना कब छोड़ा है।

लगी ठोकरे पग पग पर
हमने चलना कब छोड़ा है।

लहरे हो विपरीत परिस्थिति
को मैंने लडकर मोड़ा है।

गीत बनाकर गाया कर

दर्द बढ़े जब दिल का अपने
गीत बनाकर गाया कर।

अपने हैं जो कहाँ का शिकवा।
हरदम गले लगाया कर।

अपना साथी आप बने तो
नयी राह अपनाया कर।

क्या सुख क्या दुख सदा रहे सम
यूँ न अश्रु बहाया कर।

दर्द बढ़े जब दिल का अपने
गीत बनाकर गाया कर।

दिल के घाव समेटे अंदर
किसी को न दिखलाया कर।

यह जीवन अनमोल है समझे।
इसको यूँ न जाया कर।

राम आओ फिर एक बार

पाप का प्रतिफल बढा है।
सामने दानव खडा है।
अटल पैर सामने जडा है।
हंसी है अट्टाहास।
राम आओ फिर एक बार।

बेटियाँ हैं असुरक्षित।
रोज पापी कर रहा भक्षित।
कृत्य करता बार बार
राम आओ फिर एक बार।

कई रूप है बनाए,
मर कर शत बार जाये।
भक्त करते हैं पुकार।
राम आओ फिर एक बार।

पैसे से मत तोलो

मैं गरीब से जाना जाऊँ
इसमें हैं क्या मेरा दोष।

मैं पैसो से तौला जाऊँ।
लग जाता है मेरा मोल।

कर्म करू असफल हो जाऊ।
इसमें न मिलता संतोष।

नही चाहिए ईश मुझे
धन से मान और और सम्मान।

पर पैसो से तौले जाने पर।
होता है मुझको रोष।

माँ

माँ तो आखिर माँ होती है।
माँ तो आखिर माँ होती है।
नहीं कमी होती दुलार में।
पालन पोषण स्नेह प्यार में।
वत्सलता भरपूर मिली है।
स्नेह की सदा शमा होती है
माँ तो आखिर माँ होती है।
कितनी भी गलती करते हम
माँ से तुरंत क्षमा होती है।
माँ तो आखिर माँ होती है।

रो लूं कैसे

कहने को बहुत विचार उठे
पर शब्द नहीं बोलूं कैसे।
अपने अपने न हुए आज।
यह राज भला खोलूं कैसे।

दूसरे सहारा दे देते
मानवता के लेखे देखे।
बेचैन सोचकर मन होता।
जग रहा भला सो लूं कैसे।

कातिल दिन तिल तिल कर कटता
पर रात मुझे बेचैन किए।
अब बात दूर तक जाएगी
आंशू है पर रो लूं कैसे।

कौन कम है कौन जियादा है।
यह नही समझ में आता है।
मेरी नजरो से सभी बराबर है।
भला इन्हें कही तोलूं कैसे।।

मुझे स्वीकार नहीं

स्वाभिमान पर चोट मुझे स्वीकार नहीं,
जिस जन में है खोट मुझे स्वीकार नहीं।

समझौते हो स्वार्थ हेतु स्वीकार नहीं।
गल्प रहा हो व्यर्थ मुझे स्वीकार नहीं।

गिरकर स्वर्ण संकलन से क्या होगा,
पाप कमाकर अर्थ मुझे स्वीकार नहीं।।

बदरा आ जा

बदरा नभ में घिर घिर आओ,
तपन मिलन की धरती को हैं।

मिलकर स्नेह बढाओ।
बदरा नभ में घिर घिर आओ।

तुम बिन नभ शून्य कहाता,
तुम ही हो नव जीवनदाता।

रोर जोर से नभ में छाओ।
बदरा नभ में घिर घिर आओ।

याद मुँह जुबानी हो

मेरी साँस में मेरी एहसास में तुम हो।
मेरी आस में मेरी पास में तुम हो।

कहने जताने वाले कोई और होते हैं।
महसूस करो दिल के आसपास तुम हो।

सुबह की ताजगी, शाम सी सुहानी हो।
मेरी कविता मेरी कहानी हो,

एहसास तो करो मेरे प्रेम को।
लिखने रटने की जरूरत नहीं,
मेरे दिल में समाई याद मुंह जबानी हो।

बाल कविता

उडती नभ में लाल पतंग,
जुड़े हैं धागे उसके संग।

खींच रहे जब नीचे डोर,
उडती है वह नभ की ओर।

उछल रहे हैं संगी साथी,
लूट रहे हैं कटी पतंग।

एक दूजे में होड लगी है,
काट लगाने की है जंग।

रंग बिरंगी उडी पतंग,
धागे के संग जुडी पतंग।

लाल पीली हरी बैगनी,
कई रंग की उडी पतंग।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

विन्ध्य प्रकाश मिश्र विप्र

नरई संग्रामगढ, प्रतापगढ (उ.प्र.)

Email- pinku1009@gmail.com

Mobile - 9198989831

इस समय आपातकाल में लोग घरों में लाकडाउन का पालन कर रहे हैं। इसे एक अवसर के रूप में लेना चाहिए यह समय आत्म प्रत्यक्षीकरण का है। जब आप अपने सृजन को और धार दे सकते है। इसे हमें एक संदेश रूप में भी समझना चाहिए क्योंकि साहित्य क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए जानी जाती है। तब हमे अपनी सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को जाग्रत भी कर सकते है।

अंतरा शब्द शक्ति का अभिनव प्रयास इस आपातकाल में साहित्यानुरागी को एक प्लेटफार्म की जरूरत होती है कहाँ अपनी अभिव्यक्ति को प्रकाशित कराये ऐसे में अंतरा शब्दशक्ति के अभिनव प्रयास की भूरि-भूरि प्रसंशा की जानी चाहिए जब साहियानुरागियो को एक सुनहरा अवसर मिला है। इस आपातकाल में सृजन की महत्ता बढाने मे जन जागरण में अपनी महती भूमिका के लिए अंतरा शब्दशक्ति को लम्बे समय तक याद किया जाएगा। क्योंकि साहित्य अमर होता है।

पुनश्च अंतरा शब्दशक्ति की सम्पादक श्रीमती प्रीति समकित सुराना जी का आभार जिन्होंने इस आपातकाल के समय में सृजन चिंतन का अवसर प्रदान किया।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-201-2

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/